ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 449-451

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नई विश्व व्यवस्था मे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का उपयोग

रेखा पाण्डेय

असिस्टेन्ट प्रोफेसर –राजनीति विज्ञान, रामजी सहाय पी0 जी0 कालेज, रूद्रपुर देवरिया (उ0प्र0) भारत

Received- 03.08.2020, Revised- 08.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: shrdp357@gmail-com

सारांश : *गुट निरपेक्ष आन्दोलन का जन्म शीत युद्ध और पश्चिमी उपनिवेशवाद के एक चुनौती के रूप मे हुआ था। जब दोनो समाप्त हो गये कम से कम बाहरी और अपने परम्परागत रूप मे तो घ्नामघ का महत्व भी खत्म हो गया। लेकिन जैसा की घ्ओल्ड टेस्टा मेन्टघ मे लिखा है . मरने का भी समय होता है और जन्म लेने का भी और फिर से जन्म लेने का भी समय होता है। मरने के बाद पुनः जीवित होकर सामने आने का । ?uke? के लिए इक्कीसवी सदी पुनः जन्म लेने के लिए है अपने लिघ नई भूमिका ग्रहण करने के लिए जिसका मानवीय मसलो के लिए केन्द्रीय महत्व है। केवल इस भूमिका का दावा करना पर्याप्त नही है। एक भूमिका इतिहास की देन होती है जिसे स्वीकार किया जाना है पल्लवित पुश्पित किया जाना और उसे आगे बढाना है।*

कुंजीभूत शब्द– गुट निरपेक्ष, आन्दोलन, शीतयुद्ध, उपनिवेशवाद, चुनौती, परम्परागत, केन्द्रीय ,पल्लवित, इतिहास।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने 1950 के दशक से लेकर 1970 के दशक तक यूरोपीय साम्राज्यवाद के खिलाफ एक लामबन्दी मोर्चे के रूप मे अपनी छाप छोडी। "uke? को मध्यपूर्व के घटनाकमों की बदलती लहर ने एक ऐतिहासिक भूमिका प्रदान की । उत्तरी अफ्रीका से लंदन तक जाग्रत राश्ट्रवाद की लहर ने ब्रिटेन तथा फ्रॉस द्वारा निर्मित दुर्ग को ध्वस्त कर दिया। "uke? की नैतिक एवं राजनीतिक भावना 1955 बाडुंग घोषणा मे अभिव्यक्त हुई जब क्रान्तिकारी चीन विकासमान भारतए मिस्रए इण्डोनेशिया और अन्य अनेक नवोदित राष्ट्रो ?? साथ खडा हो गया और फिर विश्व के इतिहास मे गहन परिवर्तन की उद्घोषणा की गयी। एशिया तथा अफ्रीका की यही नैतिक एवं राजनीतिक भावना थी जिससे 1956 मे स्वेज के युद्व मे जीत हासिल की । ?uke? की दूसरी सफलता या अर्ध सफलता कांगो मे देखने को मिली। बेल्लियम उपनिवेशवाद को पीछे हटने के लिए विवश होना पडा लेकिन इसके साथ ही साम्राज्यवादी ताकतो ने अपनी ताकत मे परिवर्तन करना सीख लिया उन्हे स्वयं कांगो मे ही एक शक्तिशाली सहयोग मिल गया। लुमुम्बा का उद्देश्य असफल हो गया और उनका जीवन भी समाप्त हो गया। संयुक्त राष्ट्र के तत्कालीन महासचिव डॉग हैमर शोल्ड ने विचार व्यक्त किया कि घ्ये छोटे देश हैं जिन्हे संयुक्त राष्ट्र की जरूरत है।

प्रश्न यह है की निर्गुट आन्दोलन का उद्देश्य सिर्फ शीत युद्ध से बचना था। कदापि नहीए क्यो कि यदि शीत युद्व से बचना ही इसका उद्देश्य होता तो कई ऐसे देश जो सैनिक सन्धियो के पात्र हैं, निर्गुट आन्दोलन के सदस्य क्यो होते। इसलिए इस आन्दोलन के औचित्य और भविष्य की समीक्षा इसके घोषित सिद्वान्तो एवं सरोकारो के सन्दर्भ मे ही की जानी चाहिए। यह सही है कि निर्गुट आन्दोलन अपने घोषित सिद्वान्तो को पूर्णतः व्यवहारिक रूप देने मे असफल रहा है किन्तु सिर्फ इसी आधार पर यह कहना की अब निर्गुट आन्दोलन की उपयोगिता समाप्त हो गयी है। वास्तव मे निर्गुट आन्दोलन की गलत समझदारी है। सिर्फ इस आधार पर निर्गुट आन्दोलन को अप्रासंगिक करार नही दिया जा सकता है कि वह अपने उद्देश्यों को हासिल करने मे पूरी तरह सफल नही रहा है। क्योंकि तब तो संयुक्त राष्ट्र के सम्बन्ध मे भी यही बात कही जा सकती हैं।

तृतीय विश्व तथा नए देशो मे की लोकप्रियता अभी भी बनी हुई है। गुटनिरपेक्ष देशो की सदस्यता तथा लोकप्रियता मे निरन्तर तथा लागातार वृद्धि हो रही है। 1961 से आरम्भ होकर अब तक के समय मे एक अभूतपूर्व अर्न्तराश्ट्रीय आन्दोलन के रूप मे उभरा है। अर्न्तराष्ट्रीय मेल – मिलाप (इण्टरनेशनल अण्डरस्टैडिंग) के लिए जवाहर लाल नेहरू एवार्ड स्वीकार करते हुए संयुक्त राष्ट्र के महासचिव पेरेज डिक्वयार ने 27 फरवरी 1990 को नई दिल्ली मे अपने भाषण मे नाम को उन छः घटनाओ की सूची मे रखा था। षजिन्होने हमारे युग को बदल दिया है त्याग कर दिया है ।

एम0 एस0 राजन ने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के बने रहने तथा अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धो मे इसकी प्रासंगिकता को न्याय संगत बताते हुए कहा है– मेरे विचार मे कार्यगत शिथिलता तथा सीमाऐ होते हुए भी यह आन्दोलन इतनी देर जीवीत रहेगा जितनी कि गुटनिरपेक्ष की नीति । मेरे विचार मे यह तब तक प्रासंगिक रहेगा जब तक कि सम्प्रभुता सम्पन्न राष्ट्रए राज्यो की व्यवस्था रहेगी अथवा जब तक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

की व्यवस्था के कार्यगत निष्पत्ति मे आमूल परिवर्तन नही हो जाता। विशेषकर महाशक्ति आधिपत्य का त्याग नही किया जाता तथा वास्तविक समानताए पारस्परिक तथा तटस्थता के आधार पर इसका नियमन नही हो जाता। व्यवस्था की क्रिया विधि मे इस प्रकार का कोई परिवर्तन हो इसके आसार बडे कम हैं इसलिये वर्तमान मे आने वाले लम्बे काल तक जहॉ तक अन्तःदृष्टि जाती है यह नीति तथा आन्दोलन प्रासंगिक तथा वैध रहेगा।

वास्तव मे निर्गुट आन्दोलन की प्रासंगिकता का आकलन विकासशील देशो के स्वतन्त्र विदेश नीति के सन्दर्भ मे की जानी चाहिए निर्गुट आन्दोलन विदेशनीति की समीक्षा अन्तर्राष्ट्रीय सरोकारो के सन्दर्भ मे करता है। यू तो विश्व मे सभी राष्ट्र स्वतन्त्र विदेश नीति की बात करते हैं किन्तु को छोडकर बाकी राष्ट्र स्वतन्त्र विदेश नीति की व्यवस्था अपने राष्ट्रीय हितो के परिपेक्ष्य मे ही करते हैं। जब कि निर्गुट आन्दोलन राष्ट्रीय हितो से ऊपर उठकर विश्व शान्ति के सन्दर्भ मे इसका औचित्य तलाशता है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के उद्देश्यो को आगे बढाते हुए नई विश्व व्यवस्था मे नाम की उपयोगिता आतंकवाद, आर्थिक, असमानता, निःशस्त्रीकरण, उत्तर दक्षिण संवाद तथा दक्षिण दक्षिण संवाद संयुक्त राष्ट्र की संरचना मे संशोधन सम्बन्धी चुनौती विशेषकर सुरक्षा परिषद के सन्दर्भ मे, नव औपनिवेशिक शोषण का विरोध यदि शीत युद्ध के दिनो मे विश्व नाभकीय युद्ध की आशंका से पीड़ित रहा तो शीत युद्व के बाद आतंकवादी और अलगावादी हिंसक संघर्षो का शिकार हो चुका है। यह भी नही कहा जा सकता कि आतंकवाद किसी एक व्यवस्था विशेष की उत्पति है। बल्कि सत्य तो यह है कि इसके शिकंजे मे विकसित पूॅजीवादी देश गुटनिरपेक्ष (विकाशील) देशो से लेकर अति पिछडे स्वतन्त्र राष्ट्र तक जकडे हुए हैं । जकार्ता शिखर सम्मेलन (सितम्बर 1992) में आतंकवाद के सन्दर्भ मे राष्ट्र तथा सरकारो के अध्यक्षो ने आतंकवाद को जड़ से समाप्त करने के लिए अतिशीघ्रता से कदम उठाने के अपने उत्तरदायित्वो को निभाने की प्रार्थना की। उन्होने सभी राज्यो से यह भी आह्वान किया कि आतंकवाद को परिभाषित करने राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष तथा इसमे अन्तर को स्पश्ट करने तथा दृढ़ कार्यवाही के लिए प्रभावशाली तथा विस्तृत कदम उठाने के लिए संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान मे विश्व स्तर पर एक सम्मेलन बुलाने की बात की गयी। गुट निरपेक्ष देशो के ग्यारहवे शिखर सम्मेलन (अक्टूबर 1995) कार्टागेना मे भी अर्न्तराष्ट्रीय आतंकवाद के प्रश्न पर भी गहराई के साथ विचार विमर्श किया गया तथा इस प्रश्न पर सम्मेलन का रूख अधिक स्पष्ट व दृढ़ रहा। सम्मेलन के घोषणा मे आतंकवादी कार्यवाही की निन्दा की गई। ?uSe? के बारहवें शिखर सम्मेलन डरबन मे 3 सितम्बर 1998 को भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने विश्व में बढती हुई मुख्य समस्या आतंकवाद पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की कुछ देश अपनी राजनितिक सुविधा अथवा अन्य कारणो से आतंकवाद की परिभाषा पर सहमत नही हो पा रहे हैं। अतः इस समस्या के समाधान में गुट निरपेक्ष मंच अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकता हैं।

गुटनिरपेक्ष देशों के मतानुसार आणविक शस्त्रो के अविश्कार ने हथियारों के जमाव के जरिए सुरक्षा की परम्परागत स्थिति को बुनियादी तौर पर बदल दिया है आणविक शस्त्र युद्ध के समान्य हथियारो से बहुत बढकर है। वे सामूहिक नरसंहार के औजार हैं। वे इस मत का समर्थन करते हैं कि आणविक युद्ध जीता नही जा सकता तथा उसे कभी लड़ा ही नही जाना चाहिए। गुटनिरपेक्ष देशों के काहिरा शिखर सम्मेलन (1964) में भी पूर्ण निरस्त्रीकरण की उद्घोषणा की गई। 1983 में गुटनिरपेक्ष देशो के सातवें शिखर सम्मेलन (नई दिल्ली) में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा की दोनो ही महाशक्तियो कों शीत युद्ध के युग की समाप्ति करने सभी राष्ट्रो से निःशस्त्रीकरण के लिए अर्न्तराष्ट्रीय सर्व सम्मति जुटाने के लिए एक दुसरे के निकट आने के लिए कहा जो निःशस्त्रीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास कहा जा सकता हैं। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के डरबन शिखर सम्मेलन (सितम्बर 1998) में अध्यक्षीय पद से बोलते हुए डा0 मण्डेला ने परमाणु निःशस्त्रीकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की बात की। भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा –हमारे पड़ोसियो के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से परमाणु हथियार सम्पन्न होने के कारण हमारी सुरक्षा खतरे में पड़ गयी थी। उन्होने कहा की परमाणु हथियार सम्मपन्न देश अपने इन हथियारों को समाप्त करने के लिए सहमत हो जाते हैं तो भारत ऐसे किसी समझौते में शामिल होने वाला देश होगा। अतः निरस्त्रीकरण को लेकर भी "uke? की आज भी प्रासंगिता मानी जा सकती हैं। उत्तर–दक्षिण तथा दक्षिण–दक्षिण के बीच बातचीत का केन्द्र बिन्दु है 'नई अर्न्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सृश्टि, गुटनिरपेक्ष देशो द्वारा प्रस्तावित नई आर्थिक व्यवस्था अनिवार्यतःसंयुक्त राष्ट्र की नई अर्न्तराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के समान ही है। इसे सभी विकासशील देशो जिनमें से अधिकांश गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य हैं के समर्थन के साथ संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मंजूरी दी गई थी। गुटनिरपेक्ष देशो द्वारा नई अर्न्तराष्ट्रीय व्यवस्था की आवश्यकता इसलिए महसूस की गई चूकि विद्यमान अर्न्तराष्ट्रीय व्यवस्था का ढाँचा विश्व समुदाय के बड़े उद्देश्य

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

को पुरा करने में असफल रहा है और सिर्फ उन्ही (उत्तर) के हितो कि पूर्ति करने में लगा हैं। जिन्होने उसे बनाया। अतः अमीर (उत्तर) और गरीब (दक्षिण) देशो के बीच खाई को समाप्त करने के लिए गुटनिरपेक्ष अन्दोलन ने काहिरा में जुलाई 1962 में आयोजित आर्थिक विकास की समस्याओ पर सम्मेंलन मे पहली बार आर्थिक विकास का उल्लेख हुआ था। 1970 लुसाका में आयोजित गुटनिरपेक्ष देशो के तीसरे शिखर सम्मेलन में विकसित और विकासशील देशो के बीच तेजी से बढते हुए विभाजन को दृष्टिगोचर किया जिसने अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को खतरा था 1998 के डरबन सम्मेलन मे भी उत्तर के देशो द्वारा दक्षिण के देशो के साथ भेद–भाव पूर्ण व्यवहार करने पर अफसोस व्यक्त किया गया।

गुटनिरपेक्ष राष्ट्रो का मत हैं कि आर्थिक स्वाधीनता उतनी ही महत्वपूर्ण जितनी की राजनीतिक। गुटनिरपेक्ष देश यह मानते रहे हैं कि नई अर्न्तराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था कि स्थापना सर्वाधिक राजनीतिक महत्व की बात हैं। गुटनिरपेक्ष देश आर्थिक उदारीकरण नीति के तहत दिन–प्रतिदिन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के गुलाम होते जा रहे है। वह दिन दुर नही जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियो से प्रतिस्पर्धा में देशी कम्पनियॉ या तो जर्जर हो जायेगी या उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। 1945 में जब संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई तब से लेकर आजतक की परिस्थितियो मे काफी बदलाव आ चुका हैं। गुटनिरपेक्ष देशो के कार्टागेना शिखर सम्मेलन (अक्टुबर 1995) में भी सयुक्त राष्ट्र के सविंधान और ढाँचे को संशोधित करने का प्रावधान रखा गया। सम्मेलन में बोलते हुए फिदेल कास्त्रो ने राष्ट्र संघ के मौजूदा ढाँचे विशेशकर सुरक्षा परिषद की कटु आलोचना की थी। उन्होने परिषद को अप्रजातान्त्रिक एवं काल दोषयुक्त बताया। सम्मेलन ने अपनी घोषणा में इस बात पर जोर दिया कि संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद के सदस्यो की संख्या में वृद्धि की जाये इस वृद्धि में सभी का प्रतिनिधित्व हो। संयुक्त राष्ट्र के भूतपूर्व महासचिव बुतरस घाली ने भी कहा कि संगठन को सुधारने की तत्काल आवश्यकता है उन्होने सुधारो का एक मसविदा भी सुरक्षा परिषद में प्रस्तुत किया।

अतः यह कहना तर्क संगत नही लगता कि गुटनिरपेक्ष अन्दोलन कि प्रासंगिकता वर्तमान परिस्थिति में समाप्त हो गया हैं। इस आन्दोलन की प्रसांगिकता इसके उद्भव और विकास से लेकर आज तक बना हुआ है। क्योकि ध्नैमध् का मूल उद्देश्य स्वतन्त्र विदेश नीति तथा शान्ति भी रहा है। नई विश्व व्यवस्था मे भी यह आन्दोलन सदस्य राष्ट्र तथा विकसित देशो के बीच आर्थिक तकनीकी, वैज्ञानिक सहयोग स्थापित कर ?uSe? की उपयोगिता को सिद्ध कर रहा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एम0 एस0 राजन – गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का व्यवहार –पृष्ठ– 272
2. एम0 एस0 राजन – गुटनिरपेक्ष राष्ट्र तथा संयुक्त राष्ट्र – पृष्ठ– 120
3. प्रो0 श्री प्रकाशमणि–अर्न्तराष्ट्रीय संगठन – पृष्ठ– 351
4. डॉ0 मालविका बनर्जी –दि नॉन अलाइण्ड मूवमेन्ट।
5. रिचर्ड जैक्सन– द नॉन एलाइन्ड द यू0एन0 एण्ड सुपर पावर्स– पृश्ठ– 10

*****